आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2373 • उदयपुर, बुधवार 23 जून, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

ऑनलाइन जारी होंगे दिव्यांग प्रणामपत्र

अब दिव्यांगजनों को दिव्यांगता का सर्टिफिकेट ऑनलाइन ही जारी हो सकेगा। अब दफ्तरों से हाथ से लिखे सर्टिफिकेट जारी नहीं किए जाएंगे। इसके लिए केंद्र सरकार ने सभी राज्यों को एक निर्देश जारी किया है। यह निर्देश भारत सरकार की ओर से दिव्यांगजन अधिकारिता विभाग की ओर से दिया गया है। निर्देश के मुताबिक 1 जून, 2021 से राज्यों को यूडीआईडी पोर्टल के जरिए ही दिव्यांगता प्रमाण पत्र जारी करना होगा। राज्य सरकारों के लिए यह काम अनिवार्य कर दिया गया है।

इस फैसले के बारे में केंद्र सरकार ने 15 मई, 2017 को नियम जारी किया था। इस नियम के मुताबिक, केंद्र सरकार ऑनलाइन मोड में राज्यों या केंद्र शासित प्रदेशों के लिए दिव्यांगता सर्टिफिकेट जारी करना अनिवार्य बनाने के लिए तारीख तय करने का अधिकार देता है। साल 2020 में केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री की अध्यक्षता में एक बैठक हुई थी। इसमें 1 अप्रेल 2021 से ऑनलाइन दिव्यांगता का सर्टिफिकेट जारी करने का आदेश दिया गया है। सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशो के अधिकारियों को यूडीआईडी पोर्टल WWW.swaviambancard.gov.in पर काम करने के लिए दिव्यांगजन विभाग की ओर से ट्रेंनिग दी गई है। राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के ऑनलाइन मोड में बदलने के लिए पर्याप्त समय दिया गया सामाजिक लाभ मिलने में कोई देरी नहीं होगी।

लिंक के माध्यम से कोई दिव्यांगजन आसानी से यूडीआईडी कार्ड बनवा सकता है। यह काम पूरा ऑनलाइन है और इसके लिए कहीं जाने की जरूरत नहीं है। प्रमाणपत्र पाने के लिए इस वेबसाइट का सहारा ले सकते हैं। वहां पूछी गई जानकारी देकर दिव्यांगता का प्रमाणपत्र ले सकते हैं। कार्ड बनाने के बाद उसे डाउनलोड करने की सुविधा दी जाती है।

सरकारी सुविधाओं का लाभ

यूडीआईडी यानी कि यूनिक आईडी फॉर परसन्स विद डिसेबलिटीज, (यूडीआईडी) सरकार की एक कोशिश है कि ताकि देश में दिव्यांगजनों का एक डेटाबेस तैयार किया जा सके। इस आधार पर उन्हें सरकारी योजनाओं में शामिल कर मदद दी जा सके। इसके तहत हर दिव्यांगजन को यूनिक नंबर तरह से डिजिटल है और पूरे देश में एक साथ मान्य है।

हर दिन हजारों संक्रमितों की मदद कर रहा है नारायण सेवा संस्थान

मानव सेवा में हमेशा अग्रणी नारायण सेवा संस्थान ने कोरोना की दूसरी लहर से प्रभावितों के लिए विभिन्न सेवा प्रकल्प शुरू किए है। रोजाना हजारों संक्रमितों और उनके परिजन इनसे लाभान्वित हो रहे है। संस्थापक पद्मश्री कैलाश जी मानव के निर्देश पर प्रशांत जी अग्रवाल के नेतृत्व में पिछली 17 अप्रेल से घर–घर भोजन, कोरोना दवाई किट, एम्बुलेंस और ऑक्सीजन की निःशुल्क सेवाएं दी जा रही है। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि इन सेवाएं के अलावा संस्थान की उत्तरप्रदेश में मेरठ और महाराष्ट्र के परभणी जिले में भी संचालित की जा रही है।

संस्थान अब तक 60544 भोजन किट, 278 से अधिक ऑक्सीजन सिलेंडर, 2701 कोरोना दवाई किट और 342 जन को एम्बुलेंस की फ्री सेवाएं दे चुका है। सेवाकार्यों में संस्थान की 80 सदस्यीय टीम जुटी हुई है। हेल्पलाइन नंबर पर सूचना मिलते ही टीम सदस्य बीमार को सेवा में तत्काल पहुंचते है। उन्होंने बताया कि यह सेवाएं दूसरी लहर की समाप्ति तक निरन्तर रहेगी। बेरोजगार और मजदूर भाइयों के लिए भी राशन पहुंचाने की सेवा शुरू की। सेवा प्रकल्पों को सुचारू रखने के लिए निदेशक वंदना जी अग्रवाल और पलक जी अग्रवाल की देखरेख में एक विशेष सेल गठित किया गया है।

सेवा–जगत्
निःस्वार्थ सेवा, नारायण सेवा संस्थान

पाली (राज.) में 45 दिव्यांगों के कृत्रिम हाथ–पैर लगाए

कन्यादेवी पत्नी घेवरचंद जी बोहरा की याद में बोहरा परिवार द्वारा रोटरी भवन में निःशुल्क दिव्यांग जांच एवं ऑपरेशन चयन शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का नेतृव्य महावीर इंटरनेशनल महिला विंग और नारायण सेवा संस्थान उदयपुर द्वारा किया गया। महिला विंग की चेयरमेन ललिता जी कोठारी और संस्था के जोन चेयरमेन तेजपाल जी जैन ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ संरक्षक राजेन्द्र जी भंडारी, सुमित्रा जी जैन, भामाशाह मोतीलाल जी जैन, प्रकाशचंद जी, राजेश जी बोहरा एवं डॉ. बंशीलाल जी शिन्दे द्वारा किया गया। महिला विंग की सदस्यों द्वारा महावीर प्रार्थना का पठन किया गया। शिविर में जिले भर से 45 दिव्यांगों के हाथ–पैर इत्यादि का माप लिया गया। साथ ही जरूरतमंद दिव्यांगों को कैलिपर्स वितरित किए गए।

शिविर के लाभार्थी मुकेश जी बोहरा, राजेश जी बोहरा तथा संयोजक कांतिलाल जी मूथा, संरक्षक नूतनबाला जी कपिला, प्रभारी पुनीत जी मूथा, डॉ. के. एम. शर्मा जी, बाबू बंबोली जी, सुशील जी बालिया, आदित्य जी मूथा, सचिव प्रियंका जी मुथा, खुशबू जी मेहता, अभिलाषा जी संकलेचा, स्वीटी जी कोठारी, भारती जी मेहता, संगीता जी मेहता, सुरभि जी कोठारी, मनाली जी बोहरा, चंचल जी बोहरा, रक्षा जी वैष्णव, राज कंवर जी चौहान, नारायण सेवा के भंवरसिंह जी, राहुल जी, हरिप्रसाद जी लढ्ढा, मुकेश जी, मोहन जी, भरत जी, जयप्रकाश जी आरोड़ा, पुष्पा जी परिहार, अंजु जी भंडारी, पीयूष जी गोगड़ आदि ने अपनी सेवाएं दी। महावीर रसोई गृह के माध्यम से दिव्यांगों के लिए व्यवस्था की गई तथा रोटरी अध्यक्ष अमरचंद जी बोहरा द्वारा निःशुल्क भवन उपलब्ध करवाया गया। अंत में सरंक्षक राजेंद्र जी भंडारी ने कार्यकर्ताओं एवं दिव्यांगों का आभार व्यक्त किया।

महिलाओं को सामाजिक कार्य में लाएंगे आगे– ललिता जी कोठारी

महिला विंग की चेयरमेन ललिता जी कोठारी ने इस मौके पर कार्यकर्ताओं व प्रबुद्ध नागरिकों को संबोधित करते हुए कहा कि महावीर इंटरनेशनल द्वारा कार्यकर्ताओं को आगे लाने के लिए इस विंग की स्थापना की गई। इसके लिए सदस्यता अभियान चलाकर शहर में सक्रिय महिलाओं को इस संगठन से जोड़ेंगे और ऐसे शिविर और आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने शिविर के लाभार्थी भामाशाह बोहरा परिवार भांवरी वालों को भी साधुवाद दिया।

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

कोरोना संक्रमितों के सेवार्थ नि:शुल्क सेवाएं

ऑक्सीजन सिलेंडर सेवा

अब तक नि:शुल्क 278 ऑक्सीजन सिलेण्डर दिये

'घर – घर भोजन' सेवा

अब तक घर–घर नि:शुल्क 60,544 भोजन पैकेट वितरित

कोविड पॉजिटिव बीमारों को कोरोना किट सेवा

अब तक नि:शुल्क 2701 कोरोना किट संक्रमितों को दिये

बीमार को एम्बुलेंस सेवा

बीमार को हॉस्पीटल पहुँचाते संस्थान कर्मी अब तक 342 जन लाभान्वित

हैड्रोलिक बेड सेवा

162 जन को हैड्रोलिक बेड कराये उपलब्ध

कोरोना प्रभावित 30,445 मजदूर परिवारों को राशन वितरण

अपनी जुबानी

संस्थान की कोरोना सेवाओं से लाभान्वितों के अनुभव

मैं और मेरे परिवार के अन्य सदस्य माता–पिता, पत्नी और दोनों बहने कोरोना पॉजिटिव हो गए। हमनें डॉक्टर्स की सलाह पर होम आइसोलेट रहने का फैसला लिया। लेकिन हम सभी संक्रमितों के सामने दोनों समय के भोजन की समस्या थी। हमारा खाना कौन बनाएं? तभी हमें नारायण सेवा के घर–घर भोजन सेवा की जानकारी मिली।

संस्थान की हेल्पलाइन नम्बर पर कॉल किया। हमें 6 पैकेट भोजन भेजना शुरूकर दिया। वास्तव में खाना– बहुत स्वादिष्ट था। अच्छे से पैकिंग में सुरक्षित पैकेट 15 दिन तक निरन्तर मिलता रहा स्वादिश्ट भोजन। अब हमारा पूरा परिवार पूर्ण स्वस्थ हो गया। इस सेवा के लिए संस्थान का बहुत आभार।

– अंकित माथुर, उदयपुर

मैं और मेरी पत्नी व बेटे को बुखार आने लगा। कोरोना टेस्ट करवाया। हमारी रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आ गई। तभी हम सब घर में आइसोलेंट हो गए। हम तीनों बीमार दवाई और भोजन के लिए चिंन्तित थे। तभी मेरे मित्र ने मुझे नारायण सेवा संस्थान की कोरोना किट और घर–घर भोजन सेवा से अवगत कराया। मैंनें दूरभाष से सम्पर्क किया। हमें कोरोना दवाई किट और भोजन पैकेट सुविधा शुरू हो गई। 14 दिनों तक संस्थान से कार्यकर्त्ताओं की सेवाएं मिली। सुपाचय और रूचिकर भोजन के साथ कोरोना मेडीसन खाकर कोरोना संक्रमण से उबर गए। हम सभी अब पूर्ण स्वस्थ्य है। संस्थान की दिल से धन्यवाद।

– रानू राजपूत, उदयपुर

सम्पादकीय

यह समाज भामाशाहों की खान है। कभी देशरक्षा के लिए, कभी संस्कृति रक्षा के लिए, कभी सज्जनों की रक्षा के लिए तो कभी दीनों के हित समय–समय पर अनेक भामाशाह अपना खजाना खोलते रहे हैं।

यह समाज दधीचियों की भी खान है। कभी सत्य के लिए, कभी देवत्व के लिए, कभी न्याय की स्थापना के लिए तो कभी अभावों से जूझने के लिए अनेक दधीचि अपनी अस्थियों को गलाते रहे हैं। यह समाज हर्षवर्धन और कर्ण का भी जनक है। जब–जब समाज को तन, मन, धन की आवश्यकता पड़ी, जब–जब विषमता की खाइयाँ चौड़ी होने लगी। कोई कर्ण, कोई हर्षवर्धन आगे आता गया और समाज में समता, ममता द्वारा एक लयबद्धता निर्मित करता चला गया। यह वसुंधरा समय–समय पर ऐसे नरपुंगवों को जन्म देती रहती है। यह शृंखला अनवरत है, अटूट है तथा अति प्राचीन है। आज भी इसी भाव से जीने वाले लाखों लोगों के कारण ही मानवता, मानव–सेवा और मानव कल्याण के दीपक जल रहे हैं।

कुछ काव्यमय

त्याग तपस्या की धरा,
भारत देश महान।
इसीलिए भगवान भी,
आते बन इंसान।।
देव तरसते जन्म को,
पुण्यभूमि यह देश।
त्यागी तपसी ही यहाँ,
करते रहे प्रवेश।।
इतिहासों में है लिखी,
भारत की तासीर।
परहित में लुटती रही,
जीवन की जागीर।।
अपना जीवन होम कर,
बचे पराये प्राण।
जग कल्याणक मृत्यु को,
यहाँ कहा निर्वाण।।
औरों के हित जो मरे,
वो ही जीव महान।
उपकारी जीवन यहाँ,
आन बान अरु शान।।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

अपनों से अपनी बात

सेवा का आह्वान

परमार्थ की भावना जब उत्पन्न होती है, तो अपना सब कुछ देने को तत्पर हो जाती है। जीवन साथी का सहयोग मिलने पर यह और भी स्तुत्य हो जाती है।

माघ विद्वान कवि थे एवं प्रतिभावान भी। अपनी अद्‌भुत काव्य शक्ति के बल पर उन्होंने कमाया भी बहुत। इतने पर भी वे कभी सम्पन्न न बन सके। जो हाथ आया वह अभावग्रस्तों, दुःखी–दरिद्रों की सहायता के लिए बिखेर दिया।

एक बार उस क्षेत्र में दुर्भिक्ष पड़ा। कवि ने अपनी सम्पदा बेचकर वहां के दीन–दरिद्रों की अन्नपूर्ति के लिए लगा दिया। मात्र उनका नवरचित काव्य घर में शेष रह गया था। सोचने लगे इसके बदले कुछ पैसा मिला

जाये तो उसे भी समय की आवश्यकता पूरी करने के लिए लगा दिया जाय। माघ और उनकी धर्म पत्नी लम्बी पैदल यात्रा करके राजा भोज के दरबार में पहुँचे। एक अपरिचित महिला द्वारा काव्य, बेचने की दृष्टि से प्रस्तुत किया गया। काव्य के कुछ पृष्ठ उलटते ही राजा दंग रह गया। उन्होंने मुक्त हस्त से उसका पुरस्कार दिया। जो मिला उसे लेकर मार्ग में फिर वही दुर्भिक्षग्रस्त क्षेत्र मिले, वहीं से बांटना चालू किया।

आपका यह संस्थान दुर्भिक्ष रूपी पोलियो विकलांगों के लिए जो कर रहा है, वह है –समुद्र में बूंद के समान। इस भगवत कार्य में आपश्री की धनरूपी लक्ष्मी द्वारा आहुति की वैसे ही आवश्यकता है –जैसे दुर्भिक्षग्रस्त क्षेत्र में अन्न की।

संस्थान के कई दानदाता इस महायज्ञ में सुदूर रहते हुए भी अपनी आहुतियाँ दे रहे हैं –पुण्य का संग्रह कर रहे हैं– यदि आपश्री अभी तक नहीं जुड़ पाये है किसी कारण से तो अभी जुड़ जाइये– अन्तःकरण में उठे विचारों को दबाइये मत। दीजिये –सेवा में अपना सहयोग।

–कैलाश 'मानव'

विपत्ति में धैर्य

शांति और अशांति मन के अन्दर होती है, जो मनुष्य इस बात को समझ लेता है, वह कभी दुखी नहीं होता, परंतु दुख मनुष्य की प्रवृत्ति है। दुखों का कारण है –अपेक्षा। मनुष्य में सदैव यह इच्छा रहती है कि सभी उसकी स्तुति करें, वाहवाही करें और जब हमें यह नहीं मिलती है तो हम क्रुद्ध हो जाते हैं। हमारे मन में कटुता भर जाती है और हम जोर–जोर से चिल्लाकर दूसरों को दोष देने लगते हैं अर्थात् हम अपनी संतुष्टि या शांति के लिए दूसरों पर आश्रित रहते हैं, जो कि गलत है।

गूगल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुन्दर पैचई एक रेस्तरां में बैठे थे। उनके सामने वाले टेबल पर दो महिलाएँ बैठी थीं, जिन्होंने कॉफी के लिए ऑर्डर दिया था। अचानक कहीं से एक कॉकरोच आकर उनमें से एक महिला की साड़ी पर बैठ गया। कॉकरोच के बैठते ही वह महिला अपने होशो–हवास खो बैठी। उसने अपने कपड़ों को बेतरतीब तरीके से झटकना शुरू कर दिया। रेस्तरां का पूरा हॉल उस महिला की चीखों से गुंजायमान हो गया। कभी वह कुर्सी पर तो कभी टेबल पर चढ़कर कूदती, कभी अपने बैग को झटकती। इस तरह करते–करते उस महिला के कपड़े, बाल आदि पूरी तरह से अस्त–व्यस्त हो गए थे। किसी तरह से वह कॉकरोच उसके कपड़ों से हटा और फिर उस महिला ने चैन की साँस ली। लेकिन कॉकरोच उछल कर उसकी साथी महिला के कपड़ों पर जा बैठा।

इस महिला की स्थिति भी पहले वाली के समान ही हो गई। उसने भी पूरे हॉल को अपने सिर पर उठा लिया। सभी लोग परेशान हो गए। चारों तरफ एक बार पुनः कोलाहल का माहौल हो गया। दूसरी महिला ने भी कॉकरोच को हटाने के लिए प्रथम महिला की भाँति ही अपने वस्त्रों–बालों आदि को बिगाड़ कर रख दिया। अब कॉकरोच दूसरी महिला के ऊपर से हटा और उछल कर सीधे उस वेटर के सीने पर जा बैठा, जो उनके लिए कॉफी लेकर आ रहा था। वह वेटर बिल्कुल शांत रहा। वह तनिक भी नहीं घबराया। उसने शांतिपूर्वक उन महिलाओं के टेबल पर कॉफी परोसी और धीरे से उस कॉकरोच को, जो उसकी शर्ट पर चल रहा था, पकड़ा और दरवाजे के बाहर छोड़कर आ गया।

कहने का तात्पर्य यह है कि समझदार लोग मुसीबतों का सामना अत्यन्त शांत व धैर्यवान बने रहकर, समझदारी से करते हैं। वे स्वयं भी शांत रहते हैं और दूसरों को भी शांत रखते हैं, जबकि नादान व्यक्ति परेशानियों के आने पर स्वयं भी अधीर बन जाते हैं और दूसरे लोगो को भी मुसीबत में डाल देते हैं। धैर्यवान लोग कभी भी परेशानियों के लिए दूसरों पर दोषारोपण नहीं करते।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

ऐसे ही एक बार कैलाश ने स्वयं को लोहा बताते हुए राजमल भाईसा को लिखा कि मैं आप जैसे पारस पत्थर के साथ में रहने के बावजूद भी सोना नहीं बन पाया। भाईसा की इसके जवाब में 3 पृष्ठों की चिट्‌ठी आई जबकि वे सदैव पोस्ट कार्ड का ही उपयोग करते थे। वे मानते थे कि पोस्टकार्ड से कम पैसों में काम हो जाता है तथा तुरन्त लिख दिया जाता है। इतनी लम्बी चिट्‌ठी लिख उन्होंने कैलाश को समझाने की कोशिश की कि सोना बनने की आकांक्षा भी मत करना। देश लोहे से चलता है, सोना तो बरबादी करता है। भाईसा की यह बात कैलाश के मन में घर कर गई।

भाईसा बीसलपुर, जवाई बांध आदि क्षेत्रों में शिविर लगाते थे। कैलाश का उनके प्रति अनुराग भक्ति भाव में बदल गया और वह भी छुट्‌टियां ले लेकर इन शिविरों में अपनी सेवाएं देने लगा। भाईसा की अपनी कार थी, उनकी सहृदयता का लाभ उठाते हुए एक परिचित ने उनसे अपने प्रयोग के लिये कार मांग ली। भाईसा ने सहजता से उसे कार दे दी। इसके बाद तो वह आये दिन कार का प्रयोग करने लगा। भाईसा मना नहीं करते, यही सोचते कि कार किसी के काम तो आ रही है।

एक बार भाईसा ने अपने कार्य हेतु कार सुमेरपुर भेज दी, तो यह परिचित नाराज हो गये। भाईसा को उसकी बातों से बहुत दुःख पहुँचा। कार उनकी थी, वो चाहे जैसे इसका उपयोग करें। कैलाश को इस घटना से बहुत रोष हुआ लेकिन इस घटना को भी जीवन का सबक बताते हुए भाईसा ने उसे समझाया कि दुनिया में सब तरह के लोग मिलते हैं। **अंश- 42**

कोरोना के नए स्ट्रेन के लिए कारगर है गिलोय

कोविड–19 की दूसरी लहर या कोरोना वायरस के नए स्ट्रेन के लिए भी गिलोय कारगर है। गिलोय की टेबलेट्स से रोग प्रतिरोधक क्षमता में इजाफा होता है जिससे यह रोग की सीवियरिटी को रोकता है। डॉ. सर्वपल्ली राधा.ष्णन् राजस्थान आयुर्वेद विवि की ओर से वायरस से लड़ने के लिए गिलोय की 500 मिलीग्राम की टेबलेट सुबह–शाम लेने का प्रोटोकॉल बनाया है। यह टेबलेट कोई भी ले सकता है। विवि की और से गत वर्ष बोरनाडा कोविड सेंटर मे 40 मरीजों पर गिलोय टेबलेट का परीक्षण किया गया था। ये सभी मरीज आयुर्वेद के अलाक्षणिक अथवा बहुत कम लक्षणों वाले थे। गिलोय लेने के बाद चौथे अथवा पांचवे दिन मरीज कोरोना पॉजिटिव से नेगेटिव हो गए।

सीधा फेफड़ों में जा रहा वायरस

कोविड–19 का बदला स्ट्रेन नए लक्षण के साथ सामने आया है। एक शोध के अनुसार 25 प्रतिशत मरीजों में नेगेटिव रिपोर्ट के बावजूद फेफड़ों में संक्रमण था यानी वायरस गले में ठहरने की बजाय सीधा मुंह में उतर गया। वायरस को फेफड़ों को अधिक क्षति पहुंचाने से रोका जा सकता है।

फाइब्रोसिस से कठोर हो रहे फेफड़े

वर्तमान में कोविड का बदला स्ट्रेन सीधे फेफड़ों पर आक्रमण कर रहा है। फेफड़े स्पंज की तरह होते हैं, जिनके फैलने व संकुचित होने से शरीर में ऑक्सीजन की आपूर्ति होती है। संक्रमण से फेफड़ों में फाइब्रोसिस हो जाता है और कठोर होते जाते हैं। कठोर से ऑक्सीजन भेजने की जगह नहीं बचती।

यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है, कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।

अनुभव अमृतम्

डॉक्टरी कार्ड था मैंने कार्ड देखा उनका। मैंने ए.पी. एम. साहब की मदद ली। मैंने कहा साहब रजिस्ट्री हाँ–हाँ दिलाओ–दिलाओ। उनको दे दी। वो चले गये रजिस्ट्री लेकर के। धन्यवाद देकर के। मनोज बाबूजी ने कहा भैया आपने दो–तीन बार कहा मैंने दवाई की एक गोली भी नहीं ली, अच्छी बात है। आपका डॉ. से काम नहीं पड़े तो और अच्छी बात हैं। लेकिन बार–बार ऐसा अभिमान। अरे। अभिमान क्या कैलाश जी? मैं बीमार ही नहीं हुआ। बाद ना कभी बीमार होऊंगा। अच्छी बात है भगवान की आप पर कृपा है। 20–25 दिन बाद देखा वो खाँस रहे हैं। ज्यादा ही खाँसी आ रही है, 15 दिन हो गये। खाँसते–खाँसते जुकाम हो गया, बुखार आ गया। डॉ. के पास गये। डॉ. ने कहा आपको टी.बी है, 9 महिने दवाई लेनी पड़ेगी। अब जो आदमी गर्व से कहता था मैंने एक दवाई नहीं ली। सत्य को भी गर्व से बताना आवश्यक नहीं है। अपने लिए अभिमान करना ठीक नहीं हैं।

तूं भी टूटे मैं भी टूटूं।
एक मात्र सब हम ही हम हो।।
यह भी अच्छा वह भी अच्छा।
अच्छा–अच्छा सब मिल जावे।

अभिमान क्या काम का भाई? तो टी.बी. की दवाई चालू हुई, 9 महिना। 3 दवाई सुबह, 3 दवाई शाम को छः गोली रोज की लगातार। अभिमान टूटा। एक दिन मेरे को बोले– बाबूजी बाबूजी, मेरे अभिमान ने मेरे को डुबो दिया। मुझे बहुत गर्व था। अब देखो गोलियों पर गोलियाँ खा रहा हूँ। टी.बी हो रही है– अद्भुत जीवन। ऐसे हमारे एक तार बाबू थे। एक टेबल पर एक मशीन लगी हुई है। छोटा–सा तार बिजली से लगा हुआ है।

सेवा ईश्वरीय उपहार– **169** (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति
(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें
मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999
आपके अपने संस्थान का पता
नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023